हिंदी फिल्मों में बिखरी हुई हैं राजस्थानी लोक धुनें

-मधु शर्मा

राजस्थान के लोकगीतों और लोकधुनों ने भी हिंदी फिल्मों के संगीतकारों को सदा से लुभाया है। यहां के लोकसंगीत की मिठास और रेत के धोरों का निर्झर बहता सुरीला एकाकीपन संगीतकारों को एक नए और अनूठे रस का अहसास कराता रहा है।

यही वजह है कि फिल्मों में मरू प्रदेश के संगीत का ज्यादातर इस्तेमाल ऐसे संगीतकारों ने किया है जो यहां से जुड़े नहीं रहे पर संगीत की उनकी समझ बड़ी गहरी रही है। उन्होंने राजस्थान के कई लोक रागों पर अच्छा काम किया है। 1960 में राजस्थान की ऐतिहासिक कहानी पर बनी फिल्म 'वीर दुर्गादास' में एसएन त्रिपाठी ने राजस्थानी शैली का एक बेहद सुन्दर युगल-गीत 'थाने काजलियो बना लूं' कम्पोज किया था, जो आज भी उतना ही लोकप्रिय है। भरत व्यास के लिखे इस गीत को लता मंगेशकर और मुकेश ने गाया। भरत व्यास और एस एन त्रिपाठी की जोड़ी का एक गीत 'भंवर म्हारा जैपर जाइजो जी' फिल्म 'जय चित्तौड़' (1961) में आशा भौसले ने गाया। मांड भी एक ऐसा ही राग है जो

शास्त्रीय होते हुए भी लोक धुनों में अपना परिचय खोजता है। यह राजस्थान की मिट्टी से जुड़ा हुआ राग है, तभी तो जब भी कभी राजस्थान के पार्श्व पर किसी फिल्म का निर्माण हुआ है, उन फिल्मों के संगीतकारों ने इस राग का भरपूर फायदा उठाया है। मांड का सबसे सुपरिचित उदाहरण है 'केसरिया बालमा ओ जी', जिसे अलग अलग अंदाज में कई संगीतकारों ने अपने फिल्मों में जगह दी है। हृदयनाथ मंगेशकर ने फिल्म 'लेकिन' में लता जी से इसे गवाया था। 'केसरिया बालमा ओ जी, के तुमसे लागे नैन' और हाल ही में 'नन्हा जैसलमेर' फिल्म में हिमेश रेशमिया के संगीत में जयेश गांधी और सोनू निगम ने गाया था 'केसरिया बालमा ओ जी, पधारो म्हारे देस' जिसमें मांड और पाश्चात्य रीदम का फ्यूजन किया गया था। राजस्थान की मिट्टी की खुशबू है इस राग में, जिसे सुनते ही मन जैसे पंख लगाकर उड़ जाता है उस रंगीले सरजमीन पर, मरुभूमि पर ऊंटों की चलती कतारें, रंग बिरंगी पगडियां सर पर बांधे वहां के सजीले लोग, बंजारों का सुरीला संगीत, मुंह में पानी लाता वहां का स्वादिष्ट खानपान, कुल मिलाकर इन सभी चीजों की एक झलक दिखा जाती है राग मांड।

साल 2006 में बनी नागेश कूकनूर की फिल्म 'डोर' की कहानी राजस्थान की पृष्ठभूमि से थी और यहां भी संगीतकार सलीम-सुलेमान ने करसन सर्गाथिया से 'केसरिया बालम' गवाया। अंकुर तिवारी के निर्देशन में बनी फिल्म 'लेट्स एन्जॉय' में भी इसका इस्तेमाल किया गया। यूं तो इस राग का प्रयोग ज्यादातर राजस्थानी लोक संगीत पर बने गीतों में किया गया है, लेकिन सचिन देव बर्मन ने